आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-62 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | मार्च, 2017 | मूल्य - 5 रूपए

शौचालयों का इस्तेमाल क्यों नहीं कर रहे हैं सड़क एवं कामकाजी बच्चे

स्ट्रीट बच्चों ने समझाया शौचालय का अर्थशास्त्र

बालकनामा के पत्रकारों को जब पता चला कि दिल्ली सरकार ने यह घोषणा की है कि अब लोग एक रूपया देकर किसी भी शौचालय का इस्तेमाल कर सकते हैं तो इस घोषणा से सड़कों पर जीवन गुजारने वाले बच्चों के जीवन में क्या प्रभाव पड़ेगा इसके लिए बालकनामा पत्रकार ने बच्चों से बात की।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने बताई शौचालयों की समस्याएं और शिकायतें

पत्रकारों ने दिल्ली में रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों से मुलाकात की जो लालबत्ती एवं पुल के नीचे भीख मांगने का काम करते हैं। इन बच्चों से पत्रकार ने दिल्ली सरकार की शौचालय से संबंधित नई योजना के बारे में पूछा तो 12 वर्षीय रोहित ने बताया कि भईया हम बच्चों को बहुत परेशानी होती है क्योंकि मेरे परिवार में पांच लोग हैं और हमारे माता पिता कोठी में काम करने के लिए जाते हैं। उनको प्रतिमाह तीन हजार रूपये मिलते हैं, जिसकी वजह से हम बच्चे शौचालय का प्रयोग नहीं कर पाते हैं, क्योंकि हम बच्चे दिन में चार से पांच बार तो शौचालय जाते ही हैं। शौचालयों में मूत्र करने का दो रूपये और मल करने के पांच रूपये बोर्ड पर लिखे होते हैं लेकिन जो व्यक्ति शौचालय की देखरेख करता है वह ज्यादा पैसे लेता है जैसे मल करने का दस रूपया और मूत्र करने के पांच रूपए लेता है। इसलिए हम केवल शौचालय के लिए हर दिन लगभग 150 रूपए खर्च कर देते हैं। इस वजह से परिवार के सभी सदस्य खुले में शौच करने जाते हैं, क्योंकि हम बच्चे शौचालय का प्रयोग करेंगे तो एक दिन की पूरी कमाई हमारी सिर्फ शौचालय में ही खर्च हो जाएगी।

15 वर्षीय करन ने बताया कि हमारे माता पिता भीख मांगने का काम करते हैं। मैं भी भीख ही मांगता हूं। हम लोग पूरे दिन मुश्किल से 50 रूपए भी नहीं कमा पाते हैं तो शौचालय करने के लिए 10 रूपये कहां से लाएंगे। सभी सड़क एवं कामकाजी बच्चों का यही कहना है कि अभी स्वच्छ भारत अभियान चल रहा है, लेकिन हम बच्चे मजबूर होकर खुले में शौच करते हैं। क्योंकि हमारे पास इतने पैसे नहीं हैं कि हम प्रतिदिन 100 से 150 रूपए शौचालय पर खर्च कर सकें।

13 साल की नजराना ने बताया कि भईया हम लड़कियों को तो बुहत परेशानी होती है। एक तो हम पैसे देकर भी शौचालय का प्रयोग करते हैं। इसके बावजूद शौचालय बहुत गंदा रहता है। पैसे लेने के लिए तो सब तैयार रहते हैं लेकिन साफ सफाई करने के लिए कोई तैयार नहीं होता है। शौचालय में मल ऐसे ऊपर नजर आता है। हम लड़कियां शौचालय की देखरेख करने वाले व्यक्ति से बोलते हैं तो वह बोलते हैं कि अगर तुम लोगों को ज्यादा परेशानी हो रही है तो खुद क्यों नहीं साफ कर देती हो। शौचालय उपयोग करना है तो करो नहीं तो यहां से जाओ।

शेष पृष्ठ 2 पर

अगर मैं अपने समाज को स्वच्छ रखना चाहूं तो मुझे प्रतिदिन लगभग 100 से 150 रूपए खर्च करने पड़ेंगे। पत्रकार एक ऐसे परिवार से मिला जिसमें वह सिर्फ शौचालय इस्तेमाल करने के लगभग 100 रूपये खर्च करता है। 16 वर्षीय परिवर्तित नाम कमला ने बताया कि, ''मेरे घर में 12 सदस्य हैं जिसमें हम 8 महिलाएं हैं अगर हम को मूत्र करने भी शौचालय जाना होता है तो हम जाते हैं जिसके हमें एक बार शौचालय इस्तेमाल करने पर 5 से 10 रूपये देने पड़ते हैं। महिलाएं अगर पूरे दिन में तीन तीन बार भी शौचालय जाती हैं तो उन्हें लगभग 120 रूपये खर्च करने पड़ते हैं। लड़कों को मूत्र करने जाना होता है तो वह एक बार को कहीं भी खड़े होकर कर सकते हैं, लेकिन हम लड़कियों को शौचालय की जरूरत पड़ती ही है, हम इधर उधर नहीं बैठ सकते हैं।''
मेरी पूरी फैमली लगभग 150 रूपए इसी काम में खर्च कर देती है। शौचालय का इस्तेमाल अगर हम करते हैं तो हमें पूरे दिन में लगभग 150 रूपए रोज इसी काम के लिए खर्च करने पड़ते हैं। इससे अच्छा तो यही होगा कि हम भी बाहर खुले में ही शौच करें। इससे कम से कम हमारे पैसे तो बच जाएंगे। इसी वजह से बच्चे इधर उधर जाते हैं।

रक्षक बने भक्षक

बालकनामा ब्यूरो

स्टेशन पर काम करने वाले बच्चों के साथ पत्रकार ने उनकी समस्याओं के बारे में पूछा तो 15 वर्षीय बालक ने बताया कि जब बच्चों के लिए काम करने वाली गैर संस्थाओं के कार्यकर्ता हमारे साथ होते हैं तब तो पुलिस वाले हम बच्चों से

अच्छे से बात करते हैं, लेकिन जैसे ही वह चले जाते हैं तो पुलिस वाले हमसे फिर गाली से बात करने लग जाते हैं। हमारे साथ मारपीट करते हैं। ऐसा लगता है कि जो भी स्टेशन पर घटना होती है वह हम बच्चे ही करते हैं। जब पब्लिक का सामान चोरी हो जाता है तो रात को सोते समय भी हम बच्चों को उठाकर थाने में ले जाते हैं और बुरी तरह से मारते हैं। जब कि हम बच्चे कोई गलत काम नहीं करते हैं। क्या हम बच्चों को जीने का अधिकर नहीं है।

17 वर्षीय बालक ने बताया कि हम बच्चे अभी स्टेशन पर रहते हैं। स्टेशन पर पुलिस वाले आते हैं और हमें बुलाते हैं कि थाने चलो मैं तुम्हारे लिए कुछ कपड़े लाया हूं। पर कपड़े के बहाने से गलत काम करते हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप लोगों से क्या गलत काम करने के लिए बोलते हैं? 12 वर्षीय बालक ने बताया कि एक दिन मैं अपने दोस्तों के साथ गाड़ी में से बोतल बीनकर छटाई कर रहा था तभी एक पुलिस वाले आए और बच्चों से बोला कि तुम लोगों के लिए मैंने

शेष पृष्ठ 4 पर

जलते तंदूर की आंच से स्वास्थ्य पर पड़ा बुरा असर

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार ने एक ऐसे बच्चे से मुलाकात की जो बचपन से ही एक ढाबे में काम करता आ रहा है। पहले वह बहुत छोटा था लेकिन अब वह ढाबे में काम करते करते 15 साल का हो गया है। शुरू शुरू में वह ढाबे में सिर्फ आटा गूंधने का काम करता था। लेकिन अब वह बच्चा तंदूर में तंदूरी रोटी लगाने का काम कर रहा है। पत्रकार से उस बच्चे ने बताया कि मैं बिहार का रहने वाला हूं और मैं बचपन से यही काम करता आ रहा हूं। पहले जब मैं छोटा था तब मैं यह सब काम सीख रहा था। अब जब मैं काम सीख गया हूं तो मैं खुद तंदूर में तंदूरी रोटी लगाने लगा हूं। उसने बताया कि ठंड के मौसम में आसानी से रोटी लगा लेते थे लेकिन अब धीरे धीरे गर्मी का मौसम वापस आ रहा है। इन दिनों में तो तंदूर में रोटी लगाने पर हालत खराब हो जाती है, क्योंकि गर्मी के मौसम में तेज तपती तंदूर की आंच से हमारे शरीर में लाल लाल दाने हो जाते हैं जो शरीर में बहुत जलन करते हैं। गर्मी में जब तक तंदूर के पास काम करते हैं तो हमारे शरीर पर पसीना रहता है तंदूर के अंदर हाथ डालने पर तो कोयले की जलती आंच से हाथ भी जल जाते हैं। यह काम और दूसरे काम से बहुत खतरनाक है। पत्रकार ने उस बच्चे से पूछा कि आप स्कूल जाना चाहते हो? तो उसने कहा कि कैसी बात कर रहे हो मेरी आधी जिंदगी तो ऐसे ही गुजर गई अब मैं शायद कुछ सालों का मेहमान हूं।

तंदूर में रोटी लगाने की वजह से मेरे शरीर का खून जल गया है, मेरे हाथों में हमेशा झनझनाहट रहती है मुझे अजीब महसूस होता है। ऐसा लगता है कि जैसे इस काम को करने से मेरे स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ा है।

संपादकीय

प्रिय साथियों,

नमस्कार!

सड़क व कामकाजी बच्चो की ओर से आप सभी को होली की बहुत बहुत बधाई और ढेर सारी शुभकामनाएं।

साथियों हर बार की तरह इस बार भी हम बच्चों का अखबार बालकनामा एक नए अंक के साथ सच्ची घटनाओं व खबरों को लेकर प्रकाशित हुआ है। बालकनामा पत्रकारों ने दिल्ली सरकार की एक रूपए में शौचालय जाने की योजना के बारे में सड़क एवं कामकाजी बच्चों से बात की और उनके विचार जानें।

साथियों, बालकनामा के पत्रकारों ने स्टेशनों, फुटपाथों, झुग्गी, झोपड़ियों का दौरा करके बच्चों की परेशानी को जाना व समझा। बच्चों को होनी वाली परेशानियों के बारे में जाना और कैसे लड़कियों के लिए घर हो या बाहर असुरक्षित महसूस हो रहा है, इसकी सच्ची तस्वीरें आपके समक्ष लेकर आए हैं। इस प्रकार हम अपने अखबार के माध्यम से छोटी, बड़ी खबरों के साथ आपके बीच उपस्थित हुए हैं।

आशा करते हैं कि इस बार का अंक आपको पसंद आएगा। अपनी प्रतिक्रियाएं ऊपर लिखे पते पर अवश्य भेजने का कष्ट करें।

संपादकीय टीम

पांच किलो समान लेने पर मिलता है बच्चों को पीने का पानी

बातूनी रिपोर्टर आरती रिपोर्टर शम्भू

दिल्ली के ओखला पुल के नीचे रहने वाले बच्चों को सबसे ज्यादा समस्या पीने के पानी की हो रही है। यहां आस पास कहीं भी पीने का पानी नहीं मिलता है। इसलिए बच्चे दूर दूर तक पानी भरने के लिए जाते हैं। यहां एक मंदिर है। उस मंदिर के पास एक नल है। पर उस नल पर एक बूढ़ी औरत ने कब्जा कर रखा है। वह बूढ़ी औरत अपने गुजारे के लिए राशन की दुकान चलाती है और बच्चों के माता पिता से बोलती है कि अगर तुम मेरी दुकान से सामान लोगे तभी मैं तुम्हें पीने का पानी भरने दूंगी। और वह पांच किलो आटा लेने पर ही पीने के लिए पानी भरने देती है। इसलिए बच्चों के माता पिता को मजबूरन उसकी दुकान से सामान लेना पड़ता है क्योंकि वह जबरन बोलती है कि पांच किलो आटा, पांच किलो चावल लेने पर ही पानी भरने दूंगी। जो लोग उसकी दुकान से राशन नहीं लेते वह उन्हें पीने के लिए पानी भी नहीं भरने देती।

एक दिन सभी बच्चों ने मिलकर उनसे बोला कि आन्टी जी हम बच्चों के माता पिता तो आप की ही दुकान से सारा सामान खरीदते हैं फिर आप हमें पानी क्यों नहीं भरने देती हो।

तो आन्टी ने बोला एक दो किलो लेने से कुछ नहीं होता है जब तक पांच किलो नहीं लोगे तब तक पानी नही भरने दूंगी। हम बच्चों ने उन्हें समझाया कि आप तो जानते हो हम लोग त्रिपाल के घर में पुल के नीचे रहते हैं और उस जगह में बहुत चूहे हैं जो हमारा सारा का सारा सामान खा जाते हैं। इसलिए हम थोड़ा थोड़ा सामान आप से खरीदते हैं। यह जानने के बाद भी वह हमसे पांच किलो सामान ही लेने के लिए बोलती हैं और तभी हमें पीने के लिए पानी भरने देती है। एक तो हमारे इतने पैसे खराब होते हैं, दूसरी ओर चूहे भी हमारा सारा का सारा राशन खा जाते हैं

नाटक के माध्यम से माता पिता को बताया कि कैसे रखें अपने बच्चों का ख्याल

बातूनी रिपोर्टर खुशी, रिपोर्टर शम्भू

हमारे देश में जो बच्चे सड़कों पर रहते हैं इन बच्चों को कौन कब उठाकर ले जाता है, कुछ पता ही नहीं है। जब पुलिस थाने में रिपोर्ट लिखवाने के लिए जाते हैं तो उन बच्चों के माता पिता की कोई सुनता नहीं है कि क्या हुआ, कैसे हुआ। पुलिस उनसे कहती है कि पहले तो तुम खुद अपने बच्चों का ख्याल रखते नहीं हो जब तुम्हारा बच्चा तुम्हारी लापरवाही की वजह से चोरी हो जाता है तो रोते हुए थाने चले आते हो और उन्हें भगा देते हैं। बढ़ते कदम के बाल साथियों ने इस घटना के ऊपर एक नाटक तैयार किया और गली गली घूमकर नाटक दिखाया कि किस प्रकार बच्चों का अपहरण हो सकता है तथा नाटक द्वारा यह भी बताया कि बच्चों की देखरेख और निगरानी माता पिता कैसे कर सकते है। जिससे कि उनके बच्चों का कोई अपहरण न कर सके। नाटक में बच्चों ने यह भी दिखाया कि कैसे बच्चों के माता पिता लापरवाह हो जाते हैं।

बढ़ते कदम के सदस्यों ने यह नाटक सराए काले खां की हर एक गली में जा जाकर किया और उन्हें समझाया कि वह अपने बच्चों का सही से ध्यान रखें लापरवाही न बरतें।

17 वर्षीय खुशी ने बताया कि हमारे देश में अभी भी बहुत बच्चों का अपहरण किया जाता है। 14 वर्षीय शहनाज ने बताया कि अब हम बच्चे यह जान गए हैं कि हर आठ मिनट पर एक बच्चा चोरी होता है। उस बच्चे को कहां ले जाते है कुछ नहीं पता। हम बच्चों को नाटक दिखाने का यही मकसद है कि लोग अपने बच्चों का ख्याल रखें अपने बच्चों को ऐसे ही कहीं बाहर खेलने के लिए नहीं भेजें। अगर बच्चा कहीं खेलने भी गया है तो उस पर अपनी नजर साधे रहें।

स्ट्रीट बच्चों ने समझाया शौचालय का अर्थशास्त्र

पृष्ठ 1 का शेष

बदरपुर बॉर्डर में लगभग 1500 झुग्गी झोपड़ियां बनी हुई हैं, जहां भारी मात्रा में सड़क व कामकाजी बच्चे भी हैं। वहां के रहने वाले बच्चों से भी पत्रकारों ने बात की तो उन्होंने बताया कि हमारे यहां एक भी शौचालय नहीं है और सभी बच्चे और उनके माता पिता खुले में ही शौच करने के लिए जाते हैं और कुछ बच्चे स्टेशन पर चले जाते हैं और जब भी कोई स्टेशन पर रेलगाड़ी आती है तो वह बच्चे किसी भी रेलगाड़ी में शौच करने के लिए रेल में चढ़ जाते हैं। रेलगाड़ी में शौच करने के बाद रेलगाड़ी में से कहीं पर भी उतर जाते हैं। इसका कारण है कि उनके पास पैसे नहीं हैं जो वह शौचालयों का इस्तेमाल कर सकें।

दिल्ली सरकार ने घोषणा की है कि 1 रूपए में शौचालय जा सकते हैं,

लेकिन अगर घर में 8 सदस्य हैं और इन सदस्यों ने अगर प्रतिदिन दिन में 3 बार शौचालय का इस्तेमाल किया हो तो उनके लगभग 24 रूपये खर्च होंगे और महीने का 720 रूपए खर्च होंगे। इतने पैसे एक कबाड़े बीनने वाला परिवार या भीख मांगने वाले बच्चे नहीं दे सकते तथा इस कारण से बच्चे बाहर खुले में ही बैठ जाते हैं।

15 वर्षीय शम्भू ने बताया कि मैं सराए काल खां में रहता हूं। मेरे परिवार में सभी लोग बाहर खुले में ही शौच करने जाते हैं। इसकी वजह है कि हमारे मोहल्ले में एक भी शौचालय नहीं है।

बच्चों के सुझाव

- शौचालयों पर कम पैसा खर्च हो उसके लिए उपाय है या तो हर एक बच्चे के लिए एक टॉयलेट कार्ड बनाकर दें, जिसकी वैधता एक महीने की हो और उस कार्ड में बच्चे की फोटो हो। उसकी कीमत 10 से 15 रूपये हो सकती जो हम बच्चे दे सकते हैं।
- बच्चों के लिए शौचालय निःशुल्क कर दिया जाए।
- एक बच्चा सिर्फ 1 रूपए में पूरे एक दिन शौचलाय इस्तेमाल कर सके, यह लागू कर दिया जाए।
- हर मोहल्ले में पब्लिक की संख्या के हिसाब से शौचालय बनाए जाएं।
- बच्चे चाहते है जिस जगह शौचालय नहीं बना हुआ है, उस जगह सरकार को शौचालय बनाना चाहिए ताकि गंदगी नहीं फैले और शौचालयों को स्वच्छ रखा जाए।

कागज के लिफाफे बनाते है छोटे बच्चे

रिपोर्टर शम्भू एवं ज्योति

पत्रकार को विजिट के दौरान पता चला कि 7 से 11 साल तक के मासूम बच्चे अखबार काटकर मूंगफली रखने वाले लिफाफे बनाते हैं। जब पत्रकार ने इन बच्चों से बात की और पूछा कि आप लोग तो बहुत छोटे हो यह लिफाफे कैसे बना लेते हो? 7 साल के पवन ने बताया कि हम बच्चे बचपन से ही लिफाफे बनाने का काम करते आ रहे हैं। हमारे माता पिता हम बच्चों को स्कूल नहीं भेजते हैं और हमारी जाति में यही होता है कि जब भी बच्चा अपना होश संभालता है तो उसके माता पिता हाथ में कॉपी किताब देने के बजाए कैची और अखबार थमा देते हैं और बोलते हैं कि घर पर बैठकर लिफाफे तैयार करो। मेरी मम्मी दूसरे के घरों में काम करने के लिए जाती हैं। पापा मौसम के अनुसार अलग अलग प्रकार का सामान बेचते हैं, जैसे सर्दियों में मूंगफली एवं गर्म खाने वाली चीज बेचने का काम करते हैं और गर्मी के मौसम में सब्जी एवं खिलौने बेचने का काम करते हैं।

पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप लोग कितने घंटे लिफाफे बनाते हो? 10 वर्षीय यागनी ने बताया कि हम सुबह आठ बजे से लेकर रात को नौ बजे तक लिफाफे बनाते हैं और हमारी मम्मी पहले से ही आटा का मलीदा बनाकर रख देती हैं। और हम बच्चे पूरी दिन भूखे प्यासे लिफाफे बनाने में लगे रहते हैं। जब लिफाफे तैयार हो जाते हैं, उसके बाद हम लिफाफों की पैकिंग भी करते हैं। फिर हमारे माता पिता दुकानों पर जाकर लिफाफे बेचते हैं। 11 साल की रानी ने बताया कि एक पैकेट में दस पीस होते हैं और एक पैकेट 20 रूपये का बिक जाता है।

नाड़े बेचकर करते हैं गुजर बसर

बातूनी रिपोर्टर श्रवन, रिपोर्टर शम्भू

छोटे छोटे मासूम बच्चे अपने गुजारे के लिए पूरे दिन मार्किट में भूखे प्यासे खिलौने और नाड़े आदि बेचने का काम करते हैं। जब इन काम करने वाले बच्चों से पत्रकार ने बातचीत की तो 15 साल के एक बालक ने बताया कि भईया हम बच्चों को इस मार्किट के अंदर सामान बेचने में बहुत परेशानी होती है। पहले सिर्फ गार्ड अंकल जी मारते थे। अब तो पुलिस वाले भी हम बच्चों को मारते हैं। इसलिए हम बच्चे एक ही मार्किट में सामान नहीं बेचते हैं। अलग अलग जगह की मार्किटों में जाकर अपना सामान बेचते हैं जैसे कि सरोजनी नगर मार्किट या जहां पर मेला लगता है उस जगह पर बेचते हैं।

14 साल के दूसरे बालक ने बताया कि हम लोग सफदरजंग एयरपोर्ट के पास जो पुल है उसके नीचे रहते हैं। जो सामान हम बेचते हैं वह हमारा बड़ा भाई और पापा सदर बाजार से खरीद कर लाते है क्योंकि सदर बाजार में सामान किलो की दर से मिलता है। लेकिन अगर हम नाड़े ख्रीदकर लाते हैं तो वह बहुत उलझा हुआ रहता है जिसे हम बच्चे खुद सुलझाते हैं और सुलझाने के बाद नाड़े कई पोले बनाते है फिर हम बच्चे नाड़े के 100 पोले लेकर मार्किट में जाते हैं। पूरे दिन की दुकनदारी करके जो पैसा हम कमाते हैं उसी से हमारे घर परिवार का खर्चा चलता है। लेकिन पुलिस वाले आए दिन किसी न किसी बच्चे को मारते पीटते रहते हैं। बच्चों ने बताया कि हमारे माता पिता भी लालबत्ती पर यही सामान बेचते है क्योंकि मार्किट में इसलिए नहीं आते हैं जब हम बच्चों को इस प्रकार से मार पीटकर भगा देते है तो हमारे माता पिता के साथ किस तरह से व्यहार करेंगे।

शोषण के चंगुल से निकले दो मासूम बच्चे

बालकनामा ब्यूरो

दक्षिणी दिल्ली में रह रहे एक परिवार में दो बच्चे हैं एक लड़का और एक लड़की। लड़की की उम्र आठ साल की है और लड़का 12 साल का है। इन बच्चों के माता पिता कोठी में काम करने के लिए जाते हैं। जब जाकर इनके परिवार का गुजारा हो पाता है। कुछ महीने पहले इनके गांव से इनके मामा इनके परिवार के साथ आकर रहने लगे। आमतौर पर बच्चे तो अपने मामा से प्यार करते हैं और उनके आस पास ही रहते हैं। उनसे लगाव भी रखते हैं। लेकिन इन छोटे छोटे मासूम बच्चों को क्या पता कि उनका मामा किस इरादे से उनके पास सोता था। उनका मामा 8 साल की बच्ची के साथ आए दिन अश्लील हरकत करता था। जब सारे लोग घर में सो जाते थे तब उस बच्ची का मामा उसके साथ यौन शोषण करता था। यह बच्ची अपने माता पिता से कुछ नहीं बोलती थी।

इस मासूम बच्ची को डर लगता था कि अगर मैं अपने माता पिता से बोलूंगी तो मुझे ही पीटा जाएगा। इसी डर से वह चुप रहती थी। लेकिन एक रात उस बच्ची ने देखा कि उसका मामा उसके भाई के साथ भी वही सब कर रहा है जो वह उसके साथ करता था। ऐसा होते हुए उस बच्ची ने खुद अपनी आंखों से देखा। यह देखकर वह बच्ची और भी डर गई। लेकिन उसने इस बार चुप्पी तोड़ी और दूसरे ही दिन पड़ोस में रहने वाले बच्चों को इस बारे में बता दिया। यह बात सुनते ही बच्चों ने इसकी जानकारी बालकनामा के पत्रकार को दी।

उसके बाद पत्रकार ने इस मामले की पूरी छानबीन की। फिर पत्रकार चाल्डलाइन हेल्प लाइन नंबर 1098 पर कॉल करके इसकी पूरी जानकारी दी। फिर चाल्डलाइन के अधिकारियों ने उन दोनों बच्चों से बातचीत करके पूछताछ की तथा चाल्डलाइन के अधिकारियों ने बच्चों के माता पिता को बताया कि आपके बच्चे सुरक्षित हैं उन्हें कुछ नहीं होगा। अभी भी इस मामले की कार्यवाही जारी है।

नांव खींचकर कमाता है अनाज

बातूनी रिपोर्टर करन, रिपोर्टर शम्भू

12 वर्षीय करन बिहार के एक छोटे से गांव जमालपुर में रहता है। पापा शहर कलकत्ता में काम करने के लिए जाते हैं। मम्मी खेतीबाड़ी का काम करती हैं। बिहार में एक बहुत बड़ी नदी है करन भी उस नदी में नांव चलाने का काम करता है। पत्रकार करन से मिला और करन से पूछा कि आप इतने छोटे हो इस नदी में अकेले नांव कैसे चला लेते हो? करन ने बताया कि मैं कभी पढ़ाई करने नहीं गया और गांव में सही से पढ़ाई नहीं होती है। इसलिए मैं नांव चलाने का काम करने लगा। सुबह 7 बजे से लेकर रात को 10 बजे तक नांव चलाने का काम करता हूं। पत्रकार ने करन से पूछा कि आप इतने लोगों को बैठाकर नांव खींचते हो हांथ में दर्द नहीं होता है। करन ने बताया कि पहले बहुत दर्द होता था, पर अब कम होता है। करन के हाथ में छाले भी पड़े हुए थे।

करन ने बताया कि छाले तो दर्द नहीं करते हैं, लेकिन जब मैं नांव को खींचता हूं तो छाती में दर्द होता है। पहले हमेशा डर लगा रहता था कि अगर मैं नदी में गिर गया तो कैसे ऊपर निकलूंगा, लेकिन अब मुझे यह डर नहीं लगता है। क्योंकि अब

मुझे तैरना आ गया है। कभी कभी रात को काफी डर लगता है क्योंकि गांव में बिजली और लाइट भी नहीं है। यहां अंधेरा रहता है। अगर मैं नदी में रात को गिरता हूं तो मेरी जान को खतरा रहता है कि कहीं सांप या मछली काट न ले। पत्रकार ने करन से पूछा कि आप पूरे दिन काम करते हैं तो कोई पगार के पैसे देता है तो करन ने बताया कि पगार में पैसे तो नहीं मिलते हैं, लेकिन गांव वाले साल में जितनी भी फसल करते हैं वह उस फसल में से मेरे परिवार के लिए 60 किलो अनाज मेरे घर में पंहुचा देते हैं। नांव खींचने पर मुझे गेंहू, धान, मक्का, दाल मिल जाता है यही मेरी पगार है।

चार महिलाओं ने की अपनी बेटियों की भ्रूणहत्या

बालकनामा ब्यूरो

बिहार में डोम जाति की लड़कियों की जनसंख्या घटती ही जा रही है। इसका राज यह है इनके जाति में लड़कियों की सगाई छोटी उम्र में कर देते हैं। लड़के वाले दहेज इतना मांगते है कि इनके माता पिता को घर जमीन बेचकर कर अपनी बेटी को दहेज देना पड़ता है। इसी वजह से अभी हाल ही में चार महिलाओं ने कुछ महीनों पहले ही लड़की को जन्म नहीं दिया और उसकी भ्रूणहत्या कर दी। पत्रकार ने इन चारों महिलाओं से बातचीत की तो पहली महिला ने बताया कि मैंने भ्रूणहत्या इसलिए की, कि अगर मैं अपनी बेटी को जन्म देती तो उसे भी दुख भरी जिंद्गी जीनी पड़ती क्योंकि हमारी जाति में छोटी उम्र में लड़कियों की सगाई तो हो ही जाती है लेकिन अगर उस लड़के के साथ किसी भी तरह की कोई भी घटना या फिर उसकी मृत्यु हो जाए तो हमारी बेटियों को पूरी जिंद्गी विधवा बनकर ही अपना जीवन गुजारना पड़ता है। इसी तरह पत्रकार ने चारों महिलाओं से मुलाकात कर उनसे पूछा कि आप लोगों को कैसे पता चला कि आपके गर्भ में लड़की ही पल रही है। तो महिलाओं ने बताया कि अरे बाबू ये शहर नहीं है यह एक गांव है यहां पर डॉक्टर सब कुछ बता देता है। तीसरी महिला ने कहा कि हमारे यहां हमारे जैसी ऐसी कई महिलाएं हैं जो पता चलते ही कि मेरे गर्भ में बेटी पल रही है तो वह हमारी ही तरह गर्भपात करवा लेती हैं। यह हमारे धर्म और रीति रिवाज की वजह से हो रहा है। जो कभी बदला नहीं है।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

मासूम बच्चों को बनाया जाता है मोहरा

बालकनामा ब्यूरो

स्टेशन पर रहने वाले बच्चों के साथ हमेशा शोषण होता रहता है। अभी हाल ही में पत्रकार को पता चला कि जो स्टेशन पर बड़े बच्चे रहते हैं, वह छोटे बच्चों से अपराध वाले काम करवाते हैं।

15 बर्षीय बालिका ने बताया कि मैं स्टेशन पर कबाड़ा बीनने के लिए जाती हूं। मैंने देखा है जो बच्चे किसी न किसी कारण घर से भागकर स्टेशन पर आ जाते हैं, उन छोटे छोटे मासूम बच्चों का गलत उपयोग बड़े व्यक्ति अपने फायदे के लिए करते हैं।

एक बच्चा घर से भागकर आ गया था और वह बहुत रो रहा था खाना खाने के लिए वह स्टेशन पर आया वहां आकर एक व्यक्ति से मिला। उसने बहुत नशा कर रखा था जो कि वह दूसरे बच्चों से जबरदस्ती कबाड़ा भी बिनवाता है उस व्यक्ति ने बच्चे से पूछा कि तुम क्यों रो रहे हो। उसने बताया कि मेरे माता पिता ने मुझे मारकर घर से भगा दिया है इसलिए रो रहा हूं। बहुत तेज भूख भी लगी है।

उस लड़के ने उस छोटे बच्चे से बोला कि अगर तुम को भूख लगी है तो मैं एक काम करने के लिए कहूंगा वह काम करना पड़ेगा। उस व्यक्ति ने बच्चे से बोला कि जो भी व्यक्ति अच्छा दिखे उसकी तुम्हें जेब काटनी है। तब मैं तुम

को खाना लाकर दूंगा।

बडे व्यक्ति इसी तरह के हथकंडे अपनाकर छोटे और नए बच्चों को अपने जाल में फंसाते हैं और इसी प्रकार बडे व्यक्ति छोटे नए बच्चों का इस्तेमाल कर रहे हैं। उन छोटे छोटे बच्चों को जेब काटने के लिए तैयार कर रहे हैं। वह बच्चों को इसी तरह नए नए हथकंडो से अपना शिकार बनाते हैं और उनसे पैसे कमाते हैं। इस तरह का दबाव छोटे बच्चों पर हर स्टेशन पर होता है। इसके साथ साथ बड़े लड़के उन छोटे बच्चों को नशा भी करना सिखा देते हैं। इसी तरह छोटे बच्चे अपराध में फंसाए जा रहे हैं।

गांव के स्कूल में नहीं हो रही है अच्छी पढ़ाई

बालकनामा ब्यूरो

बिहार के एक छोटे से गांव बिरौल में गरीब बच्चों के लिए 4 सरकारी स्कूल बने हैं। उस स्कूल की बोर्ड पर यह भी लिखा है कि गरीब बच्चों को पढ़ना है, शिक्षा को बिहार में फैलाना है। पर सच्चाई इसके बिलकुल विपरीत है। जिस स्कूल में बच्चों को पढ़ाना चाहिए, उसी स्कूल के बाहर बच्चे कबड्डी खेलते रहते हैं और स्कूल के अंदर अध्यापक अपनी घरेलू बातें करते रहते हैं कि मेरे घर में कल क्या क्या हुआ था, तुम कल कहां गए थे।

14 वर्षीय बालक ने बताया कि मैं पांचवीं कक्षा में पढ़ाई करता हूं। पर मुझे अभी तक अपना नाम भी नहीं लिखना आया है। जब पेपर होते हैं तो अध्यापक ब्लैक बोर्ड पर प्रश्न का उत्तर लिख देते हैं और सारे बच्चे देखकर अपनी पेपर शीट भर लेते है। रोज बच्चे पढ़ाई करने आते हैं, लेकिन मुश्किल से एक घन्टे पढ़ते है

और अध्यापक बोलते हैं कि चलो खेलने का समय हो गया। आप लोग खेलने जाओ। अगर कोई बच्चा पढ़ाई भी करना चाहता है तो उससे अध्यापक बोलते हैं कि पढ़ाई का ज्यादा बुखार है तुम्हें। 15 साल के बालक ने बताया कि यह बहुत साल से चलता आ रहा है। पर हम बच्चे इस परेशानी से मुक्ति पाना चाहते हैं ताकि बिहार का हर एक बच्चा शिक्षित हो, अशिक्षित न रहे।

छोटी उम्र में निभा रही है आसमा बड़ों की जिम्मेदारी

बातूनी रिपोर्टर आत्मा, रिपोर्टर पूनम

15 वर्षीय आसमा जो अपने माता पिता के साथ रहती थी। आसमां पांच भाई बहन हैं, जो आसमा से छोटे हैं। आसमा की माता की मृत्यु हो गई है। और उसके जो पिता हैं वह बहुत शराब पीते हैं। इसी वजह से वह रोज घर में आने के बाद मोहल्ले में खड़े होकर झगड़ा करते थे। बस्ती के लोग भी आसमा के पापा से दुखी हो गए थे और वह सभी आसमा के साथ ताना शाही करते थे। इसी कारण से आसमा अपने पापा को छोड़कर आपने भाई बहन को लेकर अपनी नानी के साथ रहने लगी। वर्तमान में आसमा अपने भाई बहन का पालन पोषण करने के लिए खुद काम करती है और साथ ही अपनी नानी का भी ध्यान रखती है। क्योंकि उसकी नानी बहुत बुजुर्ग हैं। आसमा अकेले ही अपने भाई बहनों का पेट पाल रही है और घर में अंडर वियर बनाने का काम करती है।

इस काम में इसके भाई बहन भी हांथ बंटाते हैं। आसमा ने बताया कि मैं अंडर वियर का काम एक कंपनी से लेकर बनाती हूं जो मुझे कपड़े और धागे मेरे घर पर ही देकर जाते हैं। मैं पूरे दिन अंडर वियर बनाती रहती हूं। मुझे 12 पीस बानाने पर तीन रूपये मिलते हैं। पत्रकार ने पूछा कि इतने कम पैसों में कैसे आपके परिवार का खर्चा चलता है? आसमा ने बताया कि हम पांचों भाई बहन सुहब आठ बजे से लेकर रात को 10 बजे तक अंडर वियर बनाते हैं तब जाकर एक दिन में 50 से 60 रूपये तक की कमाई होती है। साथ ही आसमा ने बताया कि मैं यह काम करने के बाद अपने घर का पूरा काम करती हूं और नानी भी बुजुर्ग हैं तो उनकी भी देखरेख करती हूं।

बदसलूकी से परेशान हैं लड़कियां

बातूनी रिपोर्टर नंदनी, रिपोर्टर चेतन

रघुवीर नगर एक ऐसा इलाका है, जहां पर बड़े बूढ़े और लड़कियां सब काम करते हैं। रघुवीर नगर में एक बाजार लगता है जिसको लोग पुराना बाजार या संडे बाजार के नाम से जानते हैं। यह टैगोर गार्डन रोड के पास है। जिसमें ज्यादातर लड़कियां ही दुकान लगाती हैं और सुबह 6 बजे से लेकर दोपहर 12 बजे तक दुकान पर बैठती हैं। यह लड़कियां वह कपड़े बेचती हैं जो घरों से बर्तन देकर कपड़े लाते हैं और उन कपड़ों की अच्छी तरह धुलाई करने के बाद बाजार में जाकर बेचती हैं। इस बाजार में ज्यादातर लडकियां ही काम करती हैं। पत्रकार ने इस बारे में जानने की कोशिश की और उन लड़कियों से मुलाकात कर पता लगाया तो उन्होंने बताया कि इनके माता पिता दुकान पर नहीं बैठते हैं और लड़कियों को ही दुकान पर बैठने के लिए बोलते हैं। 16 वर्षीय बालिका ने बताया कि हमारे माता पिता इसलिए दुकान पर बैठाते हैं कि कपड़े ज्यादा बिके क्योंकि इस बाजार में लड़के भी आते हैं। लड़कियों को देखकर ज्यादा कपड़े खरीदते है।

17 वर्षीय बालिका ने बताया कि जब लड़के कपड़े खरीदने के लिए आते हैं तो अश्लील बाते बोलते हैं। कहते हैं कि जाने मन कैसे दे रही हो यह कपड़े, इसकी कितनी कीमत है और अपनी भी बता देना। जब हम हाथ बढ़ाकर उन्हें कपड़े देते हैं तो वह लड़के हमारा हाथ पकड़ लेते हैं। हमें बहुत बुरा लगता है पर हमारे माता पिता बोलते है कि कोई बात नहीं बोलने दे, छूने दे ऐसा कुछ नहीं होगा पैसे तो आ रहे हैं। अगर तुम लोग दुकान पर नहीं बैठोगी तो कपड़े कैसे बिकेंगे। अगर कपड़ा नही बिका तो घर में सबको भूखे ही रहना पड़ेगा। 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि दुकान लगाने के भी हम लोगों को 50 रूपए ठेकेदार को देना होता है। फिर 12 बजे के बाद हम लड़कियां फेरी पर भी जाती हैं। वहां भी यह लड़के लोग आते हैं अश्लील बातें बोलते हैं। हम लड़कियों को डर लगता है कि कहीं हमारे साथ कोई गलत न कर दे। पर हमारे माता पिता को चिंता नहीं है कि हमारे साथ क्या हो रहा है। उनको सिर्फ पैसे से मतलब है। क्योंकि हम लड़कियां ही उन्हें पैसा कमाकर देती हैं। हमसे ही हमारा घर का खर्चा चलता है।

रक्षक बने भक्षक

पृष्ठ 1 का शेष

कपड़े रखें हैं तुम में से कोई एक बच्चा कपड़े लेने आ जाओ। इतना सुनकर मैं पुलिस वाले के साथ थाने चला गया। पुलिस वाले ने मुझे थाने ले जाकर कहा कि मेरे पैर दबा दे। फिर मैंने पैर दबाना शुरू कर दिया मुझे लगा पैर दबाने पर ही वह मुझे कपड़े देंगे लेकिन ऐसा नहीं हुआ पुलिस वाले मेरे साथ अश्लीलता से पेश आने लगे और मेरा हाथ जबरन अपने व्यक्तिगत अंग तक ले गए। मैं बहुत डर गया और किसी तरह पानी पीने के बहाने से वहां से भाग आया। अगले दिन फिर मेरे ही जैसे किसी दूसरे बच्चे को उन्होंने अपने पास अपने रूम में किसी बहाने बुला लिया और रूम की लाइट बंद करके उसके साथ भी वही अश्लील हरकत करने लगे। वह बच्चा भी मेरी तरह भाग आया। लेकिन वह पुलिस वाले किसी भी बच्चे को नहीं छोड़ते हैं। जिससे भी मौका मिलता है वह बच्चों को बहला फुसलाकर अपने पास बुलाकर इसी तरह अश्लील हरकत करते हैं। यह पुलिस वाले हम बच्चों से बहुत प्यार से बात करते हैं, लेकिन बदले में वह बच्चों के साथ अश्लील हरकत करने लिए बोलते हैं। अगर हम बच्चे उनकी बात नहीं मानते है तो वह दूसरे दिन स्टेशन पर कबाड़ा नहीं बीनने देते हैं और मारकर भगाते हैं।

माता पिता की सख्ती नहीं पढ़ेंगी बेटियां

बालकनामा ब्यूरो

आगरा में एक जगह है जिसे लोग विलोछपुरा नाम से जानते हैं। वहां पर ज्यादा संख्या में मुस्लिम जाति के लोग रहते हैं। उस जगह पर पत्रकार को पता चला कि 25 लड़कियां ऐसी हैं जिनकी उम्र लगभग 13 साल से लेकर 17 साल तक है। इन लड़कियों के माता पिता इन्हें घर से बाहर नहीं निकलने देते हैं। इनके माता पिता बोलते हैं कि हमारी जाति में लड़की घर से बाहर नहीं जाती है और अगर कहीं जाती भी हैं तो हमेशा बुरखे पहन कर जाती हैं। 16 वर्षीय बालिका ने बताया कि मुझे पढ़ने का बहुत शौक है कि मैं दूसरे बच्चों की तरह स्कूल में पढ़ने जाऊं। अभी कुछ दिनों पहले संस्था के कुछ कार्यकर्ता हम लड़कियों को पढ़ाने के लिए आए भी थे लेकिन हमारे माता पिता ने उनसे शर्त रख दी कि मेरी बेटी एक ही शर्त पर आपके साथ पढ़ने के लिए जाएगी जब इनके बीच कोई भी लड़के पढ़ने नहीं आएंगे।

यह सुनकर संस्था के कार्यकर्ता ने बोला कि अब तो लोग लड़का और लड़की को एक सामान मानते हैं। फिर आप लोग ऐसा क्यों बोल रहे हो। उन्होने बोला कि हम अपनी बेटी को दूसरे क बच्चों की तरह बिगड़ते हुए नहीं देख सकते हैं। फिर पत्रकार ने दूसरे दिन बड़ी मुश्किल से उन लड़कियों से बात की। पत्रकार को पता चला कि लगभग 25 ऐसी लड़कियां हैं जो हमेशा घर में ही रहती है। अगर यह लड़कियां किसी भी लड़के के साथ बात करते हुए दिख जाती हैं तो इनके माता पिता इनकी बहुत पिटाई करते हैं।

15 साल की बालिका ने बताया कि हमारी जाति में अभी भी पहले जैसी परंपरा है। जैसे पहले लोग हमेशा बुरखे में रहते थे तथा किसी भी व्यक्ति से बात नहीं करते थे। अब यह हमारे साथ भी हो रहा है। इसलिए हमें पढ़ाई नहीं करने देते हैं और न ही हम लड़कियों को बाजार में जाने देते हैं। अगर हमें किसी चीज की जरूरत होती है तो हमारे माता पिता ही हमें लेकर देते हैं। हम लड़कियां इस तनाव जैसी जिंदगी से मुक्त होना चाहती हैं जैसे अन्य जगह पर लोग लड़का और लड़की में भेदभाव नहीं करते हैं वैसा ही यहां भी होना चाहिए। हमारी बस्ती में लड़का और लड़की को लेकर भेदभाव न किया जाए, उन्हें भी बराबर का मौका मिले।

मानसिक रूप से कमजोर बच्चों का करते हैं शोषण

बातूनी रिपोर्टर वर्षा, रिपोर्टर चेतन

कमला नेहरू कैम्प में एक परिवार है जो बहुत गरीब है। उस परिवार में दो ऐसे बच्चे हैं जिनकी दिमागी हालत ठीक नहीं है, जिसमें 13 वर्षीय मनी मानसिक तौर से बहुत कमजोर है मनी सही से बोल भी नहीं सकता। अगर उससे उसका नाम पूछो तो वह अपना नाम तक सही से नहीं बता पाता है। मनी इधर उधर बाहर ही घूमता रहता है। वह अपने घर में नहीं रहता है। बाहर वह कभी कभी मंदिर चला जाता है। जब उसे भूख लगती है तो वह भीख मांगकर खाना खाता है और हमेशा मंदिर पर ही रहता है। मनी को जब उसके माता पिता बुलाने के लिए जाते हैं तो वह भाग जाता है। लेकिन उसके बाहर रहने पर उसे बहुत सी समस्याओं का सामाना करना पड़ रहा है।

जब वह बाहर रहता है तो लोग उसके साथ छेड़छाड़ भी करते हैं। मनी लोगों से कुछ नहीं बोलता है क्योंकि उसकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। इसी का लोग फायदा उठाते हैं। लोग जानते हैं कि यह बच्चा तो बोल नहीं पाता है। इसके साथ हम कुछ गलत भी करेंगे तो किसी से कुछ नहीं बोलेगा। लोग मनी को पैसे का लालच देकर अपने पास बुला लेते हैं और उसके साथ अश्लील हरकत करते हैं। मनी अपने माता पिता को हाथों के इशारों से अपना दर्द बताता है, लेकिन उसके माता पिता समझ नहीं पाते हैं कि उनका बेटा उनसे क्या कह रहा है। बालाकनामा के पत्रकार को मनी की परेशानी के बारे में वहां के रहने वाले बच्चों से मालूम हुआ। वहां लोगों से बात करने पर पता चला कि उसके माता पिता दोनों कोठियों में काम करने जाते हैं इसलिए वह अपने बच्चे का ध्यान नहीं रख पाते हैं।

नाले की बदबू से बच्चे पड़ रहे हैं बीमार

बालकनामा ब्यूरो

आगरा में लोग एक जगह को रसूलपुर के नाम से जानते हैं। उस जगह में 150 से 200 तक झुग्गी झोपड़ियां हैं। उस झुग्गी के पास से होकर एक बड़ा नाला निकलता है उस नाले में बहुत गंदा पानी बहता है। उस नाले में से बहुत गंदी बदबू आती है। उसी नाले के आस पास बच्चे खेलते रहते हैं। पत्रकार को पता चला कि इसी नाले की गंदगी और बदबू की वजह बच्चे बीमार हो रहे हैं। उसके बावजूद भी लोग उस गंदे नाले में घरेलू कूड़ा कबाड़ा दें कते हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि अब तक कितने बच्चे बीमार हो चुके हैं तो 15 वर्षीय बालक ने बताया कि एक महीने में लगभग चार से पांच बच्चे बीमार हो चुके हैं, क्योंकि बच्चे उस नाले के पास खेलते हैं और बताया कि जब बच्चे अपने घर में खाना खा रहे होते हैं तो इस नाले की बदबू घर के अंदर तक जाती है, जिससे बच्चों से खाना भी नहीं खाया जाता।

15 साल की बालिका ने बताया कि सबसे ज्यादा सुबह के समय इस नाले में से बदबू आती है। जब शाम होने वाली होती है तो लोग अपने घरों का कूड़ा कबाड़ा इकट्ठा करके नाले में ही फेंक देते हैं। अगर कोई पालतू जानवर मर जाता है तो उसे भी इसी नाले में फेंक देते हैं। जिससे हम बच्चों को बदबू के मारे सांस लेने में भी बहुत परेशानी होती है। शायद बच्चे इसलिए बीमार हो रहे है। 17 वर्षीय बालक ने बताया कि अब

तो हमारे देश में स्वच्छ भारत अभियान का नारा बड़ी जोर शोर से चल रहा है। इसके बावजूद लोग अपने आस पास सफाई नहीं रखते हैं और इधर उधर कूड़ा कबाड़ा फैलाते रहते है। हमारे यहां के नाले की भी सफाई की जाए और कोई उसमें अपने घरों का कूड़ा कबाड़ा न डाले। अपने मोहल्ले को साफ रखने में एक दूसरे की मदद करें।

मजबूरी में आते हैं बच्चे शहर में काम करने

बालकनामा ब्यूरो

बिहार में 100 में से 80 बच्चों को काम करने के लिए शहर भेजा जाता है, जिनकी उम्र 13 से लेकर 17 साल तक होती है। पत्रकार एक ऐसा बच्चे से मिले जो शहर से काम करके वापस आ गया था। उस बच्चे ने अपने घर की स्थिति बताते हुए कहा कि भईया मेरे घर में कोई कमाने वाला नहीं है और मेरे पापा शहर में काम करते थे। जिनकी शहर में ही मृत्यु हो गई थी। मैं अपने घर में सभी बहनों से बड़ा हूं। मेरी पांच छोटी बहनें हैं, जिनकी शादी करने के लिए मम्मी भी दूसरे के खेतों में काम करने जाती हैं। मैं इसलिए शहर जाकर काम करता हूं ताकि मैं अपनी बहनों की अच्छे घर में शादी कर सकूं क्योंकि शादी करने के लिए लड़के वाले दहेज मांगते हैं। अगर मैं शहर नहीं गया तो मेरी बहनों की शादी नहीं होगी। बच्चे ने बताया कि मेरे चाचा के लड़के भी शहर में कोठी में काम करने जाते हैं और मैं भी उनके साथ यही काम करने जाता हूं और अपने चाचा के साथ शहर में रहता हूं।

बच्चे ने बताया कि छोटे बच्चों को शहर में कोठी में काम करने का ही काम मिलता है और जो थोडे बड़े होते हैं उन्हें शहर में होटल या ढाबों में काम मिल जाता है। छोटे बच्चों को ढाबे वाले काम पर नहीं रखते हैं। इसलिए छोटे बच्चे कोठियों में ही काम करके दो पैसे कमा लेते हैं। लोग छोटे बच्चों को कोठी में काम करने के लिए इसलिए आसानी से रख लेते हैं क्योंकि वहां कोई भी व्यक्ति जल्दी चेकिंग नहीं करता और न ही कोई सवाल करता है घरो में बच्चे छुपे हुए रहते हैं।

लड़कियों ने जताई चिंता : नहीं हैं सुरक्षित

बातूनी रिपोर्टर लक्ष्मी, रपोर्टर शम्भू

मंदिर के पास बहुत सी लड़कियां टीन के नीचे रहती हैं। इन लड़कियों को रात को सोते समय बहुत कठिनाई होती है।

पत्रकार ने इन लड़कियों से बात की तो 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि कालकाजी मंदिर के पास एक टीन से बना हुआ घर है उस में हम लड़कियां रात को सोती हैं और वह टीन का घर ऐसा है जो चारों तरफ से खुला हुआ है सिर्फ छत ही है। हम लोगों ने त्रिपाल से कुछ जगह पर पर्दा किया है। पर उससे भी कुछ नहीं होता है। कोई भी उसके अंदर आ जाता है। हम लड़कियों को हमेशा इसी बात को डर लगा रहता है कि बड़े बड़े लड़के शराब पीकर रात को इधर से उधर घूमते रहते हैं। हम लड़कियों को देखते हैं। अभी कुछ महीने पहले की बात है। एक लड़की के साथ एक हादसा हो गया था। तब उस लड़की ने जोर से चिल्लाया। उसके बाद लोग वहां इकट्ठा हो गए और उस लड़के की पिटाई की और पुलिस थाने लेकर गए।

16 वर्षीय बालिका ने पत्रकार से कहा कि भईया क्या हम लड़कियों को सुरक्षित रहने का अधिकार नहीं है। हम लड़कियों को यहां पर नहाने की भी व्यवस्था नहीं है। इसलिए हम लोग जंगल में नहाने के लिए जाते हैं। तब लड़के लोग हम लोगों को देखते रहते हैं। अश्लील बाते भी बोलते हैं कि क्या माल लग रही है। इसलिए हमारे माता पिता हम लड़कियों की छोटी उम्र में शादी कर देते हैं ताकि हमारे साथ कोई गलत न कर दे। और शादी के बाद भी हम लड़कियों पर बहुत अत्याचार होता है। हमारे साथ भी बुरा व्यवहार होता है।

महत्वपूर्ण सूचना

(स्ट्रीट टॉक)

आप भी शामिल हो

कृपया सड़क एवं कामकजी बच्चों के संगठन बढ़ते कदम एवं उनके अखबार बालकनामा का संदेश सुने ये स्ट्रीट टॉक सड़क से जुड़े बच्चों की कहानी उनकी जुबानी 11 अप्रैल 2017 को (अंतराष्ट्रीय स्ट्रीट चिल्ड्रन डे की पूर्व संध्या) को आयोजित होगा। इस कार्यक्रम का संचालन इंडिया इस्लामिक कल्चरल सेंटर 87-88 लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 शाम 4:30 से 6:00 बजे तक किया जाएगा। हमें समर्थन करने के लिए अपनी शुभकामनाएं हमें इस पते पर badhtekadam1@gmail.com और tweet @ balaknama1 पर भेजें।

पुलिस के भय से मां बाप नहीं भेज रहे हैं अपनी लडकियों को भीख मांगने

बातूनी रिपोर्टर आरती, रिपोर्टर शम्भू

पुलिस की मदद से सांसी कैम्प की लड़कियों में बदलाव आया है। कुछ महीने पहले सांसी कैम्प की कुछ लड़कियां भीख मांग रही थी। तभी चार व्यक्ति उन लड़कियों को परेशान कर रहे थे। तभी इन लड़कियों को एक पुलिस वाले सड़क पर जाते दिखाई दिए। फिर ये लड़कियां उनके पास दौड़कर गई और उनसे बोला कि भईया चार व्यक्ति हम लड़कियों को बहुत पेरशान कर रहे है और गाली गलौज भी कर रहे है। तो पुलिस वाले ने उन लड़कियों की मदद की और उन चारों लड़कों को मारकर भगा दिया। पुलिस वाले ने उन लड़कियों से पूछा कि आप लोग भीख क्यों मांगते हो और कुछ दूसरा काम क्यों नहीं कर सकते हो?

तो 15 साल की बालिका ने बताया कि भईया हम लड़कियां अपनी मर्जी से भीख नहीं मांगती हैं। हमारी जाति की यह परमपरा है। सभी लड़कियां भीख ही मांगती हैं। दूसरा काम हम लड़कियों को नहीं आता है। पुलिस वाले ने बोला आप लोग पढ़ाई नहीं करते हों? 16 वर्षीय बालिका ने बताया एक संस्था के सहयोग से ओपन बेसिक एजुकेशन से पढ़ रही हूं। पर रोज नहीं जाती हूं क्योंकि रोज इधर उधर भीख मांगती हूं। पुलिस वाले ने उस सभी लड़कियों को समझाया कि अगर आप लोग पढ़ाई नहीं करोगे तो आपको आगे भी इसी तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। इसलिए अपनी संस्था के कार्यकर्ता सहयोग से पढ़ाई करो और अपने माता पिता को भी समझाओ पढ़ना बहुत जरूरी है।

पुलिस वाले ने कहा कि अगर तुम्हारे माता पिता भीख मांगने के लिए तुम्हें भेजेंगे तो तुम बिना झिझक मुझसे बताओ मैं तुम्हारें माता पिता से बात करूंगा। अगर नहीं माने तो उन्हें बंद कर दूंगा और तुम्हारे माता पिता के खिलाफ कार्यवाही करूंगा। इस बारे में लड़कियों ने घर जाकर अपने अपने माता पिता को बताया इसलिए उनके माता पिता अब पुलिस के भय से उन्हें जबरन भीख मांगने के लिए नहीं भेजते हैं। अब लड़कियां भीख मांगने नहीं जाती हैं। अपने घर में जो काम होता है वही काम करती हैं और संस्था के कार्यकर्ता जिस दिन पढ़ाने के लिए आते हैं उस दिन पढ़ाई करती हैं।

दबाव में मांगते हैं भीख

बालकनामा ब्यूरो

आजमपाड़ा में 60 बच्चे ऐसे हैं जो सप्ताह में 6 दिन घर घर जाकर आटा चावल मांगते हैं और हर शनिवार मंदिर पर जाकर पैसे मांगते हैं। जब पत्रकार इन बच्चों से मिले तो बच्चों ने बताया कि हम बच्चे अपनी मर्जी से भीख मांगने नहीं जाते हैं हमारे माता पिता बोलते हैं कि भीख मांगने जाओ। अगर हम बच्चे भीख मांगने से मना करते हैं तो हमारे माता पिता खाने के लिए खाना भी नहीं देते हैं और रात को भूखा सुला देते हैं। इसी डर से हम बच्चे सप्ताह में 6 दिन इधर उधर से आटा चावल मांगते रहते हैं। हम बच्चों पर दबाव रहता है कि एक दिन में कम कम से 5 किलो आटा चावल मांगकर नहीं लाए तो हमारी बहुत पिटाई की जाएगी।

पर हम बच्चों को मुश्किल से एक दिन में दो किलो भी नहीं मिलता है। हमारे माता पिता यह बात समझते ही नहीं हैं। जब शनिवार का दिन आता है तो हम बच्चे पैसे मांगकर देते हैं। पैसे नहीं मिलने पर गाली से बात करते हैं कि सारे दिन खेलते रहते हो इसलिए पैसा नहीं मिला और हम बच्चों को हमेशा डर लगा रहता है कि अगर आज पैसे नहीं मिलेंगे तो आज रात भी हम बच्चों को खाना नहीं मिलेगा। इसलिए हम बच्चे शनिवार को मंदिर और बाजार जैसी भीड़भाड़ वाली जगहों पर भी भीख मांगने जाते

हैं। तब भी लोग पैसे नहीं देते हैं उनके सामने रोते भी हैं तो लोग धक्के मारकर भगा देते हैं। हमारे माता पिता को हमारी कोई परवाह नहीं है कि हमारा बच्चा पूरे दिन किस हालात से गुजकर दो पैसे मांगकर लाता है।

पवन का संघर्ष

बातूनी रिपोर्टर पवन, रिपोर्टर शम्भू

12 वर्षीय पवन सड़क पर तिरपाल से घर बनाकर रहता है। पापा की मृत्यु होने के बाद से ही उसने रिक्शा चलाने का काम शुरू कर दिया था। पवन अपने परिवार के साथ लोदी रोड पर तिरपाल डालकर रहता है। पवन ने बताया कि जब से मेरे पापा का मृत्यु हुई है तब से मुझ पर जिम्मेदारी आ गई है। मुझे अपनी मम्मी और बहन की देखरेख करने के लिए काम करना पड़ता है। इसलिए मैं दो पैसे कमाने के लिए कोई भी काम कर लेता हूं। मैं फौजी कैम्प में बर्तन धोने का भी काम करता हूं। इसके अलावा मैं रिक्शा भी चलता हूं और समय समय पर शादी पार्टी का काम मिलने पर मैं शादी पार्टी के काम पर भी जाता हूं।

पवन ने बताया कि सबसे ज्यादा परेशानी मुझे रिक्शा चलाने में होती है क्योंकि जब मैं एक व्यक्ति को अपने रिक्शा पर बैठाता हूं तो कम परेशानी होती है लेकिन जब दो लोग रिक्शा पर बैठते हैं तो मेरे छाती में दर्द होता है ऐसा लगता है कि अब मैं रास्ते में बेहोश हो जाऊंगा। लेकिन मैं अपनी हिम्मत बनाए रखता हूं। कड़ी मेहनत करके पैसे कमाता हूं, जिससे मेरी मम्मी और बहन भाई को भीख न मांगना पड़े। इसलिए मैं सभी काम करता हूं। मेरे जैसे ना जाने ऐसे कितने बच्चे हैं जिनको मेरी तरह संघर्ष करना पड़ता है।

42 बच्चों ने जानें अपने अधिकार

बातूनी रिपोर्टर यशिका, रिपोर्टर चेतन

यशिका रधुवीर नगर बी 3 में रहती है। यशिका कहने को तो 11 साल की है लेकिन वह अपने कॉन्टेक्ट प्वाइंट की एक होनहार लीडर भी है। इतनी कम उम्र में वह बच्चों को बच्चों से जुड़ी जानकारी देती है तथा उन्हें उनके अधिकारों के बारे में भी बताती है। वह बच्चों से जुड़ी हेल्पलाइन नम्बर के बारे में भी बच्चों को बताती रहती है कि कैसे हम अपनी समस्याओं के चलते इस पर मदद ले सकते हैं। और दूसरे बच्चों की भी मदद कर सकते हैं। अभी हाल ही में यशिका ने एक सपोर्ट ग्रुप मीटिंग कराई, जिसमें 42 सड़क एवं कामाकजी बच्चों ने भाग लिया। मीटिंग के दौरान यशिका ने बाल साथियों को बच्चों के अधिकारों के बारे में बताया कि कैसे तेजी से रघुवीर नगर में मासूम बच्चों से बाल मजदूरी कराई जा रही है। जिससे उनके अधिकारों का हनन हो रहा है। इसलिए मैं आप सभी बच्चों को बाल मजदूरी से मुक्त होने का तरीका

और अपने अधिकारों को कैसे पाना है यह बताने जा रही हूं। अगर कोई बच्चा कहीं मुसीबत में फंसा हुआ हो तो आप मदद कर सकते हो जैसे कि एक बच्चे को कोई जबरदस्ती काम करा रहा है तो आप 1098 पर कॉल करके उस बच्चे की मदद कर सकते हो। अगर कोई बच्चा कोठी या लेबर का काम करता है तो भी आप 1098 पर कॉल कर सकते हो। यह नम्बर चाल्डलाइन का है। यदि आपको कोई भी बच्चा मुसीबत में दिखे तो आप उसकी मदद कर सकते हो।

भीख मांगने वाले बच्चे भी चाहते हैं पढ़ाई करना

बातूनी रिपोर्टर अर्जुन, रिपोर्टर शम्भू

तुगलकाबाद स्टेशन के आस पास रहने वाले कुछ बच्चे ऐसे हैं जो पूरे दिन भीख मांगते रहते है। इन बच्चों की उम्र आठ से दस साल है। यह बच्चे मजबूरी में आकर भीख मांगते हैं। इन बच्चों के माता पिता भी भीख मांगने का ही काम करते हैं। बच्चों ने पत्रकार को बताया कि जब हम बच्चे भीख मांगने के लिए जाते हैं तो लोग भीख नहीं देते हैं, गाली गलौज करते है। पूरे दिन मांगने पर 15 से 20 रूपये मिलता है। लेकिन इन बच्चों को पढ़ाई करने का जुनून है। यह सभी बच्चे चाहते हैं कि मैं भी दूसरे बच्चों की तरह स्कूल में जाकर पढ़ाई करूं। पर इन सभी बच्चों के पास कोई भी आईडी.प्रूफ

नहीं है। जिसकी वजह से इनका स्कूल में दाखिला नहीं हो पा रहा है।

इसलिए ये बच्चे चाहते हैं कि कोई दीदी भैया हम बच्चों को घर पर ही आकर पढ़ाए, तभी हम बच्चे आगे पढ़ सकते है। पत्रकार ने खुद इन बच्चों का टेस्ट लिया तो देखा कि वास्तव में ये बहुत प्रतिभाशाली हैं। 10 वर्षीय अर्जुन ने बताया कि हम सभी बच्चे भीख मांगना नहीं चाहते हैं। हम बच्चे भी पढ़ाई करना चाहते हैं पर हम बच्चों की कोई मदद नहीं कर रहा है, जिसके वजह से हम बच्चे पढ़ाई करके आगे बढ़ सकें। जब भी हम बच्चे भीख मांगने के लिए जाते हैं तो लोग हम बच्चे से गलत व्यवहार से बोलते हैं कि तुम लोगों का तो रोज का ही धन्धा है और इसके अलावा कुछ और काम तो कर ही नहीं सकते सिर्फ भीख ही मांगना। हमारी पहचान न होने की वजह से हमारा स्कूल में भी दाखिला नहीं हो रहा है हम बच्चे कैसे पढ़ें।

स्टेशन पर रहने वाले बच्चे चाहते हैं पुलिस बने हमारे मित्र

बातूनी रिपोर्टर सलमान, रिपोर्टर शम्भू

स्टेशन पर रहने वाले बच्चों ने बताया कि कुछ दिनों से हम बच्चों को पुलिस बहुत परेशान कर रही है। स्टेशन पर जब हम बच्चे अपने कपड़े धोते हैं तो मारने लग जाते हैं। वह बोलते है कि स्टेशन पर जो पानी होता है वह गाड़ी साफ करने के लिए होता है और तुम लोग पानी बर्बाद कर रहे हो। लेकिन हम बच्चे पानी बर्बाद नहीं करते हैं। जितने पानी की जरूरत होती है उतने ही पानी का इस्तेमाल करते है। और जब कोई और लोग पूरे दिन कपड़े धोते हैं या नहाते रहते हैं उसे कुछ नहीं बोलते हैं। लेकिन पुलिस वाले जैसे ही हम बच्चों को देखते हैं वैसे ही डंडे लेकर हम बच्चों के पीटे मारने के लिए दौड़ते हैं।

15 वर्षीय बालक ने बताया कि पहले पुलिस वाले बहुत अच्छे थे। पर जब से नए पुलिस वाले आए हैं, तब से हम बच्चों को बहुत परेशान कर रहे हैं। पहले के पुलिस वाले हम बच्चों से बोलते थे कि हमेशा साफ सुथरा रहा करो और कभी नहीं मारते थे। हम बच्चों की परेशानियों को सुनते थे और हम बच्चों की हमेशा मदद भी करते थे। अगर हम एक दिन भी संस्था के कार्यकर्ता के पास पढ़ाई करने नहीं जाते थे तो खुद आकर मिलते थे और हम बच्चों से पूछते थे कि बच्चों आप लोगों को कोई परेशानी तो नहीं है। स्टेशन पर जो नए पुलिस वाले आए हैं वह बच्चों को बहुत सता रहे हैं और डंडों से मारते हैं।

एकता से मिला मेहनत का फल

बातूनी रिपोर्टर टंगा, रिपोर्टर चेतन

दक्षिणी दिल्ली की एक बस्ती के बच्चे कामकाजी हैं और शिक्षित नहीं हैं। यही कारण है कि यह काम में बहुत व्यस्त रहते हैं। जब सुबह होती है तो बच्चों के कंधों पर स्कूल बैग न होकर इनके कंधों पर कबाड़ा बीनने वाला बोरा होता है और यह बच्चे शिक्षा से संबंधित कुछ भी नहीं जानते हैं। सिर्फ इतना ध्यान रखते हैं कि अगर कबाड़ा नही मिला तो हमारा घर का खर्चा कैसे चलेगा। इसलिए यह अलग अलग जगहों पर घूम घूमकर लोहा, प्लास्टिक और बोतल बीनने का काम करते हैं। ज्यादातर बच्चों ने बताया कि जब हम कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं तो हम लड़के अलग हो जाते है और लड़कियां अलग हो जाती हैं। हम बच्चे दो समूह में बंट जाते हैं और अपना अपना समूह बनाकर कबाड़ा बीनने के लिए निकलते हैं। ऐसा हम बच्चे इसलिए करते हैं ताकि कोई भी व्यक्ति बच्चों के साथ किसी भी तरह से टेड़छाड़ न कर सके।

बच्चों से बात करने पर पता चला कि जब वह अकेले कबाड़ा बीनने जाते थे तो उन्हें बहुत परेशानी होती थी।

क्योंकि वह अपना कबाड़ा एक जगह पर जमा कर देते थे और निगरानी करने वाला कोई नहीं रहता था और उनका कबाड़ा चोरी करके कोई और बेच देता था। जिसके कारण घर पर भी मार पड़ती थी। लेकिन जब से इन बच्चों ने अपना समूह बनाया है और यह इकट्ठा होकर कबाड़ा बीनने के लिए निकलते हैं तो इनके पास कबाड़ा भी भारी संख्या में जमा हो जाता है तथा कोई भी व्यक्ति इन बच्चों का माल चोरी नहीं कर पाता है। क्योंकि अब यह बच्चे एकजुट होकर काम करते हैं। बच्चों ने कहा कि हम बच्चे एक दूसरे की हिम्मत बने रहते है। जब से हमारा समूह में काम करना शुरू हुआ है तभी से हमारा कबाड़ा अब कोई चोरी नहीं करता है हमारी मेहनत का हमें आधा फल नहीं, बल्कि पूरा फल मिलता है। एकता से ही हम बच्चों में हिम्मत आई है और ज्यादा फायदा भी होता है।

स्टेशन पर रहने वाले बच्चों ने जाना एकता क्या होती है

बातूनी रिपोर्टर रोहित, रिपोर्टर शम्भू

रेलवे स्टेशन पर जो बच्चे अपने गुजारे के लिए कूड़ा कबाड़ा बीनने का काम करते हैं और दिन भर नशे में लिप्त रहते थे, इन बच्चों को पता ही नहीं था कि एकता क्या होती है। यह बच्चे आपस में हमेशा लड़ते झगते रहते थे इसलिए बालकनामा के पत्रकार ने सभी बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मींटिग की और सबसे पहले बच्चों से ही पूछा कि एकता किसे कहते है? 15 वर्षीय रोहित ने बताया कि भैया एकता क्या होती है? बच्चों को बिलकुल पता नहीं था, क्योंकि बच्चे हमेशा स्टेशन पर अपने कामों में लगे रहते हैं। इन्हें कहां से पता होगा कि एकता क्या होती है। बच्चों

ने कहा कि मैंने तो पहली बार यह नया शब्द सुना है। फिर पत्रकार ने सभी बच्चों को समझाया कि एकता का मतलब होता है कि हम एक साथ है। अगर हम बच्चों पर कोई परेशानी आती है तो हम सभी को मिलकर सामना करना चाहिए। उसे ही एकता बोलते हैं फिर पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि अब आप लोग बताओ एकता किसे कहते हैं। बच्चों ने कहा कि अब हम समझ गए कि जैसे हम बच्चों में से बहुत बच्चे भीख मांगते हैं उनको किसी दिन कुछ भी नहीं मिलता है तो हमारे पास पैसे होते हैं उस पैसे में से हम बच्चे उनको खाना खिला सकते हैं। ताकि वह भूखे न रहें। और जब कोई व्यक्ति हम बच्चों को मारते पीटते हैं तो उसका मुकाबला भी कर सकते हैं। बच्चों ने निर्णय लिया कि आज के बाद हम एक दूसरे की मदद करेंगे और हम जो थोड़ा बहुत नशा करते हैं उसको छोड़ने का कोशिश करेगें।

सपना की हिम्मत को सलाम

बातूनी रिपोर्टर सपना, रिपोर्टर शम्भू

16 वर्षीय सपना बदरपुर बॉर्डर के पास एक झुग्गी में रहती है। पिता का नाम रामकुमार है। माता का नाम कमली है। दोनों घर का खर्चा चलाने के लिए काम करते हैं। सपना के दो छोटे बहन भाई हैं, जो स्कूल जाते हैं। सपना घर में बड़ी है इसलिए स्कूल नहीं जाती है। घर का काम करती है। साथ ही वह कोई भी त्यौहार आने पर भीख मांगने के लिए बाहर भी जाती है।

ऐसे ही सपना दशहरा पर कन्या खाने के लिए कालकाजी मंदिर गई थी तभी सपना ने देखा कि एक छोटा बच्चा जिसकी उम्र लगभग 7 से 8 साल होगी, वह मम्मी मम्मी कहकर रो रहा था।

तभी सपना वहां पर गई और उस बच्चे से पूछा कि बाबू आप क्यों रो रहे हो?

उस बच्चे ने बताया कि मैं अपने मम्मी के साथ मंदिर आया था पर मेरी मम्मी मिल नहीं रही है। फिर सपना

ने हर जगह पर खोजना शूरू किया जो सपना के साथ लड़कियां कन्या खाने के लिए आई थीं उन्होंने भी बच्चे के माता पिता को खोजना शुरू कर दिया। एक घंटे बाद बच्चे के माता पिता कमल मंदिर के पास मिले। उनसे मिलने के बाद पता चला कि वह भी अपने बच्चे को इधर उधर ढूंढ रहे थे।

सपना ने बच्चे को उनके माता पिता को सौंप दिया और कहा कि आंटी जी आप अपने बच्चे का ध्यान रखो क्योंकि अभी दशहरे का समय है भीड़ भाड़ बहुत है। वह बच्चे के माता पिता को समझाकर चली आई। सपना इसी तरह अपने घर के आस पास रहने वाले बच्चों को भी समझाती है। उन्हें जुआं खेलने को मना करती है। कहती है जुआं मत खेलो यह अच्छी बात नहीं है, बल्कि स्कूल जाया करो। सपना ऐसी बस्ती में रहती है, जहां माता पिता अपने बच्चों को घर पर छोड़कर काम करने के लिए बाहर जाते हैं और सपना इन सभी बच्चों का बाखूबी ध्यान रखती है। क्योंकि वहां पर बहुत रेलगाड़ियों का आना जाना लगा रहता है और बच्चे अकसर वहां आस पास खेलते रहते हैं। सपना चाहती है कि मुझे भीख मांगने से किसी तरह छुटकारा मिल जाए।

मजीदा पहुंची सुरक्षित शेल्टर होम

बातूनी रिपोर्टर सलमान, रिपोर्टर शम्भू

15 वर्षीय मजीदा जो अपने घर से भागी हुई थी वह पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर आकर रहने लगी थी। जब पत्रकार मजीदा से मिला तो मजीदा ने अपनी दुख भरी कहानी बताते हुए कहा कि दो साल पहले मेरे पापा की मृत्यु हो गई थी उसके बाद मेरी मम्मी ने दूसरी शादी कर ली थी। लेकिन जो सौतेले पापा हैं वह हम तीनों भाई बहन को बहुत मारते थे। मजीदा ने रोते हुए कहा कि मेरे सौतेले पापा ने मुझे कोठी में काम पर लगवा दिया था। जहां मैं पूरे दिन कोठी में काम करती रहती थी जो भी पैसे मेरे काम के मिलते थे वो पैसे मुझे नहीं देते थे, क्योंकि महीना पूरा होने से कुछ दिन पहले ही मेरे सौतेले पापा कोठी जाकर पैसे ले आते थे। जब मुझे किसी चीज कि जरूरत होती थी तो मुझे पैसा नहीं देते थे। वह बोलते थे कि तुम्हारे मालिक ने पैसे नहीं दिए। यह सुनकर मुझे बहुत बुरा लगता था, क्योंकि मैं जानती थी कि पूरा महीना होने से पहले ही मेरे सौतेले पापा पैसे ले आते थे। पर मेरे से झूठ बोलते थे कि कोठी के मालिक ने पैसे नहीं दिए।

मैं अपनी मम्मी से भी बोलती थी कि मुझे पैसे कि जरूरत है। यह लोग मेरे दोनों भाई बहन को भीख मांगने के लिए भेजते थे। जिस दिन उन्हें भीख नहीं मिलती थी तो

उन्हें खाना भी नहीं देते थे। वह उन्हें जबरन भीख मांगने भेजते थे नही जाने पर गाली गलौज करते थे। इसलिए मैं घर से भागकर आ गई। मजीदा ने बताया कि जब मैं घर से भागी थी और स्टेशन पर आई तो स्टेशन पर मुझे बहुत डर लग रहा था। मैं वहां रोने लगी कि मैं कहां जाऊं। तब मेरी मुलाकात सलमान से हुई सलमान ने मुझे अपने बारे में बताया कि मैं भी स्टेशन पर रहता हूं। साथ ही यह भी बताया कि मैं बालकनामा अखबार का बातूनी रिपोर्टर भी हूं। मैं दूसरे बच्चों की मदद करता हूं। फिर मुझे सलमान ने खाना खिलाया। यह सुनने के बाद पत्रकार और सलमान ने मिलकर मजीदा को संस्था के कार्यकर्ता के सहयोग से शेल्टर होम भिजवा दिया।

बड़े व्यक्ति बच्चों पर दिखा रहे है दादागीरी

बालकनामा ब्यूरो

रेलवे स्टेशनों पर जो बच्चे रहते हैं, वह अपने गुजारे के लिए रेलगाड़ी में से बोतले उठाने का काम करते हैं। एक बच्चे ने पत्रकार से बोला कि भईया यहां पर हम बच्चों को बहुत बड़ी समस्या है जिस रेलगाड़ी में हम बच्चे बोतल बीनने के लिए जाते हैं वहां दो व्यक्ति हमारे साथ मार पीट करके हमें भगा देते हैं। जो भी रेलवे स्टेशन पर एक्सप्रेस गाड़ी आती है उन सभी गड़ियों पर उन दोनों व्यक्तियों ने कब्जा कर रखा है। इन दोनों की ही गुंडा गर्दी यहां पर चलती है। यह दोनों हम सभी बच्चों को किसी भी गाड़ी में कबाड़ा बीनने के लिए नहीं जाने देते हैं। अगर हम बच्चे गलती से भी किसी गाड़ी में चले गए तो बहुत बुरी तरह से मारते हैं। इसलिए हम बच्चों ने रात को आने वाली रेगाड़ियों में से बोतल उठाने का काम शुरू कर दिया है।

अब रात में भी बोतल उठाने पर हमें मार खानी पड़ती है। पुलिस वाले मारते हैं। कहते हैं कि तुम लोग रात में कबाड़ा बीनने के लिए इसलिए आते हो ताकि तुम रेलगाड़ी में सफर कर रहे लोगों का सामान चोरी कर सको। हम सभी बच्चों ने पुलिस वाले को पूरी बात बताई और कहा कि दिन में हमें रेलगाड़ी में से बोतल उठाने नहीं दिया जा रहा है। स्टेशन पर दो व्यक्ति हमें रेलगाड़ी में काम नहीं करने दे रहे हैं। अगर हम काम करते हैं तो वह हमें बुरी तरह मारते हैं। यही वजह है कि हम रात में रेलगाड़ी में बोतल बीनने के लिए आते हैं फिर भी पुलिस वाले ने बच्चों की बातों का विश्वास नहीं किया और एक बच्चा जिसकी उम्र 13 साल है उस बच्चे को बुरी तरह मारने लगे।

नाटक करके स्टेशन के बच्चों को दिया संदेश

बातूनी रिपोर्टर सलमान, रिपोर्टर शम्भू

स्टेशन पर रहने वाले बच्चों को नाटक के माध्यम से बताया गया कि किस प्रकार बच्चे अपने घर से भागकर स्टेशन पर अपना जीवन गुजारने लगते हैं और किस प्रकार वह नशे की अंधेरी दुनिया में शामिल हो जाते हैं। पहले बच्चे अपने घर में रहते हैं लेकिन वहां भी उनके साथ माता पिता या परिवार के अन्य सदस्य उसके साथ शोषण करते हैं। इसलिए बच्चे घर से परेशान होकर स्टेशन पर भागकर आ जाते हैं। यहां आने के बाद वह बच्चा खाना खाने के लिए इधर से उधर भटकता रहता है और उस बच्चे की कोई भी मदद नहीं करता है। इसलिए वह दूसरे बच्चों को जैसा करते देखता है, वह भी वैसा करने लगता है, जैसे कबाड़ा बीनना और चोरी करना। जब यह रात दिन स्टेशन पर ही रहने लगते हैं तो दूसरे बच्चों को देखकर धींरे धींरे नशा भी करने लगते हैं। एक दिन ऐसा आ जाता है कि वह बहुत नशा करने लग जाते हैं। नाटक द्वारा नशे से क्या नुकसान होते हैं इसके बारे में बच्चों को जागरूक किया गया। बच्चों को एक संदेश भी दिया गया कि अगर कोई भी बच्चा नशे की लत में फंस जाता है तो वह अपने जीवन को किस प्रकार नष्ट कर लेता है और बताया कि अगर लगतार 6 महीने तक बच्चा नशा करता है तो जान का खतरा भी हो जाता है। 15 वर्षीय सलमान ने बताया कि अगर कोई बच्चा घर से भागकर स्टेशन पर आ जाता है तो वह नशे की अंधेरी दुनियां में न फंसे, बल्कि जल्द जल्द से शेल्टर होम या फिर अपने घर वापस जाने की कोशिश करे।

बालकनामा और बढ़ते कदम सुर्खियों में

हम आपके साथ इन पलों से जुड़ी कुछ तस्वीरें शेयर कर रहे हैं...

डी.सी. वैदिक इन्टर कॉलेज स्कूली बच्चे मानव श्रृंखला करते

Police interact with street children to end 'cop fear'

New Delhi, 20 February

"If you are in trouble, inform us, we will help you," Delhi Police has told street children. They were trying to make this most vulnerable group of homeless children understand how they work.

"It was a great thing when the police uncle told me that they are there to help us if we face some harassment," said 14-year-old Nagma, a homeless girl living in the shelter home in Sarai Kale Khan.

Talking to The Statesman, the homeless children said that they had earlier feared police as they had no knowledge about police work. They have only seen police arresting them. "Before meeting them, someone had warned me that police would arrest me if I frightened but after meeting them I know that police will arrest only bad people," said Sangeeta, another homeless girl, living in the shelter. During their visit to Lajpat Nagar police station in southeast Delhi, station house officer (SHO) Kishan Pal welcomed these children and listened to their problems.

A senior police officer told this newspaper that children had some misunderstanding about police as they have never talked to us but after meeting us they were very happy. "They are a vulnerable lot and we have given them confidence that if they see anything wrong happening in the society or any one harasses them they could come to us for any help," said the officer.

The street children said that police have told them if they found anyone taking drug or beat them, they should just inform the police.

According to NGO Chetna, policeman is the first person who comes in contact with street children on behalf of state. Children often face abuse by locals. This is the right time for police and children to come together and to have a trustworthy relation.

"We approached six Delhi police stations during the police week and received overwhelming response. More than 200 children have already benefited. Children also expressed willingness to meet the police commissioner and we are in touch with his office," said Sanjay Gupta from Chetna.

बालकनामा की कवरेज एन.डी.टीवी न्यूज चैनल में

अभिनेत्री दिया मिर्जा के साथ बालकनामा अखबार के पत्रकार

बालकनामा के स्टेकहोल्डर बालकनामा लेते हुए

सड़क एवं कामकाजी बच्चों की कवरेज द स्टेटमैंट न्यूजपेपर में

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूज़लेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471